2

कहानी

व्हाइट कैप

लोकबाबू

नई बसाहटों के कारण हर साल शहर की शक्ल बदल जाती थी। निर्माणाधीन इमारतों में काम करने वाले मज़दूरों का गाँव इतनी दूर था कि वे रोज़ वहाँ लौट नहीं सकते थे । ऐसे मज़दूर निर्माणाधीन इमारतों के आस-पास ही किसी कोने में अपनी गठरियाँ रखकर, चूल्हा सुलगाकर, भोजन बनाते, खाते और रात गुज़ारते रहते ।

> यहाँ शहर के विकास और मजदूरों के जीवन के बीच की कौन-सी स्थिति दिखाई देती है?

इन्हीं मज़दूर-पहरेदारों में एक परिवार केशव का भी था। केशव आठ साल का छोटा-सा, नाटा-सा, साँवला-सा लड़का था। उसके माता-पिता, बेमेतरा ज़िले के किसी गाँव से यहाँ पहुँचे थे ।

फरवरी माह के अंत में, जब गर्मी अपने पाँव पसारने लगी थी, तीसरी कक्षा की अपनी वार्षिक परीक्षा दे चुकने के बाद केशव अपने दादाजी से माता-पिता के पास शहर जाने की ज़िद कर बैठा। बुढ़ापे में बचा-खुचा दिमाग जब पोते ने कुतरना शुरू किया तो हताश

उसके दादाजी ने उसे बस में बिठाकर यहाँ उसके माता-पिता के पास ला छोड़ा।

यहाँ आकर केशव दिन-भर के लिए परिवार के अस्थायी डेरे में अकेले पड़े रहने को मजबूर था। आखिर कुछ दिनों अकुलाते पड़े रहने के बाद केशव उस डेरे से बाहर निकला। आस-पास की दूसरी कॉलोनियों के उसने चक्कर लगाए, फिर एक कॉलोनी के पास लड़कों को क्रिकेट खेलता देखकर ठहर गया। वह दूर एक नीम के पेड़ के नीचे छाया में बैठ गया। बाकी लड़के निश्चिंत होकर क्रिकेट खेलते रहे।

> यहाँ केशव के व्यक्तित्व की क्या-क्या विशेषताएँ उभर आती हैं?

केशव अब रोज़ दिन में लड़कों का खेल देखने उधर आने लगा। नीम के नीचे बैठे अपना खेल देख रहे केशव को, लड़कों ने कुछ दिनों अपने खेल में तो शामिल नहीं किया, मगर उसे अपनी हँसी-मज़ाक का विषय ज़रूर बना लिया था। खेल में आउट होकर आए और पहले से नीम के नीचे आकर बैठे लड़के बीच-बीच में उसकी खोपड़ी पर तबला बजाते। कभी मज़ाक में सिर पर हाथ भी जमा देते, तो भी केशव मुस्कुराता रहता। कुछ बड़े लड़के सहानुभूति जताते–

"उसकी खोपड़ी के पीछे मत पड़ो यार, दुखता होगा!"

कुछ दिनों में वह लड़कों के खेल की ज़रूरत भी बन गया था। किसी लड़के के समय पर न पहुँचने पर वे केशव को उसके घर बुलवाने भेजने लगे। केशव उचक-उचककर अपने नन्हे हाथों से उस लड़के के घर की ऊँची कॉलबेल बजाता। लड़का खुद प्रकट हुआ तो ठीक, यदि उसके घरवाले निकल आते तो केशव को देखकर अपने लड़के को खेलने न भेजने का उनका इरादा और पक्का हो जाता–

"गुल्लू आज खेलने नहीं जाएगा। पढ़ाई करेगा। तुम भागो यहाँ से!"

"आंटी, उसके दोस्त बुला रहे हैं।" केशव मासूमियत से कहता।

"तुमको भागने बोला है, फिर भी खड़े हो! लगाऊँ क्या दो झापड़?"

> *गुल्लू को खेलने न भेजने के घरवालों के इरादे पर आपका विचार क्या है?*

तब खिलाड़ी की कमी की पूर्ति केशव से की जाती। मगर दूर इमारतों से, झाड़ियों से, गंदी नाली से बॉल लाने का ज़िम्मा केशव का ही होता, चाहे वह दोनों टीमों में किसीका भी हिस्सा हो। कई बार उनकी बॉल किसी

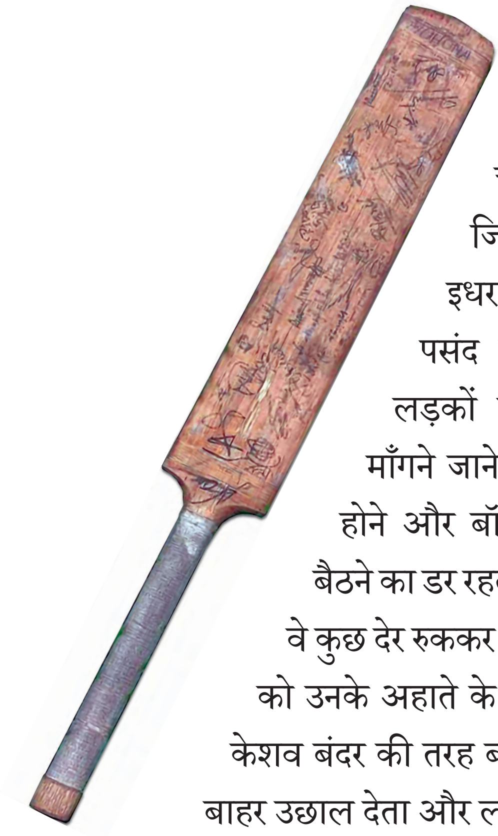

खूँखार दंपति के अहाते में चली जाती, जिन्हें लड़कों का इधर खेलना ही पसंद नहीं था। बड़े लड़कों को वहाँ बॉल माँगने जाने पर अपमानित होने और बॉल से हाथ धो बैठने का डर रहता था। इसलिए वे कुछ देर रुककर चुपके से केशव को उनके अहाते के अंदर उतारते। केशव बंदर की तरह बॉल को ढूँढ़कर बाहर उछाल देता और लड़के केशव को वापस अहाते के बाहर खींच लेते। खेल के ज़्यादातर समय केशव किनारे बैठा, बाकी लड़कों को खेलता देखता रहता।

कोई भी टीम उसे अपनी तरफ़ खिलाने को तैयार नहीं होती थी। कई बार केशव ने अपने माता-पिता से उसके लिए भी बल्ला और बॉल खरीद देने का आग्रह किया था। मगर माता-पिता ने उसे डपट दिया था–

"जब तू अच्छे नंबर से पाँचवीं पास कर लेगा तो एक बॉल खरीद ही देंगे!"

"और बल्ला...?"

"उसके बारे में भी तब सोचेंगे!"

बेचारा केशव दिन को रुआँसा पड़ा रहता, मगर रात को सपने में वह अपने को अक्सर क्रिकेट खेलता देखा करता। उसके हाथों में नया बल्ला और सिर पर झक व्हाइट कैप होती। टाँगों पर शानदार मोटे पैड कसे होते। मोटे मेंढ़क की तरह दिखते अपने उस रूप की कल्पना पर वह मन-ही-मन मुस्कुराता। दूसरे लड़के चकित हो उसे खेलता देखते रहते और वह दनादन रन पर रन बना रहा होता। ये छक्का... ये चौका... नहीं-नहीं, नॉट आउट हूँ। वह बड़बड़ाते हुए कभी-कभी उठ बैठता तो उसे माता-पिता की डाँट भी खानी पड़ती।

केशव ऐसा सपना क्यों देखता होगा?

इधर कॉलोनी के लड़कों ने होली के नाम से मोहल्ले में चंदा किया, कुछ अपना भी जोड़ा। और शहर जाकर जमा चंदे से नई क्रिकेट सामग्री के साथ एक शील्ड भी खरीद ली। चार दिनों तक चलने वाले उनके इस टेस्ट-मैच में, जीतने वाली एक टीम का उस शील्ड पर कब्ज़ा होना तय था। लड़के दो

टीमों में बँटे और कुछ दिनों अभ्यास भी करते रहे। फिर अपनी-अपनी टीम को जिताने के लिए मैदान में उतर गए । केशव को किसी भी टीम में जगह नहीं मिली थी ।

कुछ समय तक खेल अच्छा चलता रहा। फिर एक बल्लेबाज ने ऐसा छक्का मारा कि सब हक्का-बक्का रह गए । बॉल पास की निर्माणाधीन एक तीन मंजिला इमारत की छत पर चली गई । लड़कों के पास नई वह इकलौती बॉल थी और इमारत के पीछे की हिलती चाली से चढ़कर छत तक जाना उनके लिए मुश्किल काम था। उनका खेल रुक गया और वे एक दूसरे को कोसते, गाली देते नीम के नीचे आकर खड़े हो गए ।

"दस बार कहा कि यहाँ से कहीं और जाकर इस मैच को खेलते हैं, मगर तुम लोग माने नहीं। अब लो!"

"सब इस मनोज की गलती है, जिसने इतनी जोर से बिल्डींग की तरफ मारा था। अब वही जाकर बॉल लाए या फिर अपने पैसे से नया खरीदे। आज का दिन तो खराब हो ही गया समझो!"

"मुझे क्या पता था कि बॉल इतनी ज़्यादा उछल जाएगी! तुम लोगों ने यदि यहीं सामने रोक ली होती तो वह पीछे जाती ही क्यों ? कमज़ोरी तुम्हारी है!"

"अब आधा दिन बचा है और पास में कोई दुकान भी नहीं है!"

सभी लड़के भुनभुनाते हुए नीम की छाया में ही निराश बैठ गए ।

अचानक निराश लड़कों के बीच उनकी बॉल आकर गिरी। चकराए चकित लड़कों ने देखा कि उस इमारत की छत पर केशव मुस्कुराता हुआ खड़ा था और वहाँ से हाथ हिला रहा था।

लड़के उछल पड़े। एक बड़े लड़के ने खुश होकर कहा, "वाह! टार्जन है ये तो! चलो यार, काम बन गया।"

> 'चलो यार, काम बन गया'–क्या, लड़कों का यह व्यवहार उचित है? क्यों?

लड़के केशव के नीचे आने का इंतज़ार किए बिना, फिर अपने खेल में रम गए। जब उनकी बॉल झाड़ी के अंदर चली गई और खेल ज़रा देर रुक गया, तब उन्हें केशव की फिर ज़रूरत महसूस हुई। मगर केशव था कहाँ?

"अबे, देखो सालो, वो लड़का छत से उतरा कि नहीं ?"

दो लड़के दौड़कर इमारत के पीछे बँधी चाली की ओर गए और जो देखा तो चिल्ला पड़े– "अबे, ये तो मर गया लगता है।" बाकी लड़के भी घबराकर उस तरफ़ दौड़े। एक लड़का जो अपने साथ वॉटरबैग लेकर आता था, उसने ज़मीन पर मुड़े-तुड़े बेसुध-से पड़े केशव के सिर पर पानी के छींटे मारे। केशव के शरीर में हल्की-सी हरकत हुई और वह कुनमुनाने लगा– "मेरी टाँग... मेरा हाथ..!"

घबराए एक लड़के ने कहा– "चौक तक दौड़कर दो लोग जाओ और कोई भी ऑटो, टैक्सी मिले फ़ौरन लेकर आओ। हॉस्पिटल ले जाना होगा। हम इसे उठा कर बिल्डिंग के सामने वाले हिस्से में ले चलते हैं।"

लड़कों ने जतन से केशव को उठाया और इमारत के सामने वाले हिस्से की समतल ज़मीन पर ले आए। इतने में केशव के माता-पिता भी दौड़ते हुए आ गए। केशव की माँ चीखकर रो पड़ी। तभी ऑटो भी आ गया। केशव को जल्दी से उसमें लिटाया गया। उसके माता-पिता भी तत्क्षण उसके साथ ऑटो में सवार हो गए।

लड़कों का दूसरा दिन खाली-खाली बीता। उन्होंने तय किया कि बिना घर के लोगों को बतलाए कल वे अपनी साइकिलों से हॉस्पिटल जाएँगे, जहाँ केशव का इलाज हो रहा है । उन्होंने दोपहर का समय तय किया और एक-एक कर सभी नीम के पेड़ के पास जमा होने लगे । मगर तभी उन्होंने देखा, केशव के अस्थायी डेरे के पास एक ऑटो आकर खड़ा हुआ और उसमें से केशव के माता-पिता उतरकर डेरे के अंदर जा रहे हैं। मगर केशव? उन्होंने अपने एक साथी को अकेले चुपचाप जाकर केशव के बारे में खबर लाने के लिए तैयार किया।

यहाँ केशव के प्रति लड़कों की मनोवृत्ति में आया परिवर्तन किसकी ओर संकेत करता है?

वह लड़का गया और उसने ऑटोवाले से बात की और ऑटो में झाँककर चला आया। लौटकर उसने घबराई आवाज़ में धीरे-धीरे कहा, "अबे, ऑटो में केशव एक करवट लेटा है ! मुझे उसने नहीं देखा। उसके एक हाथ और एक पैर में प्लास्टर चढ़ा हुआ है। ऑटोवाले ने बतलाया कि वे सभी अपना सामान बटोरकर उसी ऑटो से अभी बस स्टैण्ड जा रहे हैं । वहीं से बस से अपने गाँव भी निकल जाएँगे ।"

"बेचारे लड़के की हड्डियाँ टूट गई हैं यार, और वह भी हमारे कारण!"

गरीब मज़दूर परिवार, जिसका अपना यहाँ कोई स्थाई ठिकाना नहीं था, अपनी कुल दो-तीन गठरियाँ लेकर जल्दी ही वापस ऑटो में आ बैठा। ऑटो चल पड़ी और जब उन खिलाड़ी लड़कों के सामने पहुँची तो उन्होंने सड़क घेर कर उसे रोक लिया।

"अंकल, केशव कैसा है?"

"आंटी, डॉक्टर क्या बोले? जल्दी ठीक तो हो जाएगा ना?" सारे लड़के चारों तरफ से ऑटो को घेरकर खड़े थे और लेटे हुए केशव को देखते हुए उसके माता-पिता से पूछ रहे थे । केशव तकलीफ़ में तो था, मगर अब लड़कों की आवाज़ सुनकर जाग गया था और इन्हें देखता हुआ लेटे-लेटे मुस्कुरा रहा था। अपना एक साबुत हाथ ज़रा-सा ऊपर उठाया तो लड़के उससे हाथ मिलाने को टूट पड़े ।

"तुम जल्दी ठीक हो जाओगे केशव" लड़कों की एक टीम के कप्तान ने कहा और अपने हाथ में रखा बिस्कुट का पैकेट केशव की माँ को सौंप दिया– "आंटी, इसे रास्ते में भूख लगेगी तो खिलाइएगा!"

"अब जब तुम लौटोगे केशव, तो हमारी टीम से खेलना।" पहली टीम के कप्तान ने केशव को ऑफ़र दिया। लड़कों ने अपने हाथों का बल्ला, पैड, स्टम्प, बॉल, और वह शील्ड जो किसी टीम की नहीं हो सकी थी, ऑटो के पीछे की जगह में केशव को दिखाते हुए धर दिया। एक कप्तान ने अपनी जेब से व्हाइट कैप निकाली और केशव के सिर की तरफ़ धर दी।

ऑटो आगे बढ़ने लगी तो केशव ने अपने पिता से कहा– "बाबू, मुझे कैप पहना दो!"

पिता ने व्हाइट कैप केशव के सिर पर पहना दी। ऑटो के आगे बढ़ने से दूर होती क्रिकेट टीमों को, जो अब भी एक जगह खड़ी, ऑटो की तरफ़ देखती हाथ हिला रही थीं, केशव ने अपने साबुत हाथ से सिर की कैप उतारी और ऑटो के बाहर निकालकर लहराने लगा।

कैप उतारकर ऑटो के बाहर लहराना किसका सूचक है?

गतिविधियाँ

» **कहानी का प्रसंग समझें, चर्चा करें :**

- कहानी में चित्रित प्रवासी मज़दूर परिवार की चुनौतियाँ क्या-क्या हैं?
- केशव शहर के अपने डेरे से क्यों बाहर निकलता है?
- केशव के सपनों के प्रति उसके माता-पिता का रवैया क्या था?
- कहानी के आरंभ में केशव के प्रति शहरी लोगों का कौन-सा मनोभाव दिखाया गया है?
- केशव के प्रति शहरी लड़कों का मनोभाव कैसे बदलता है?
- केशव को माँ-बाप के साथ गाँव वापस क्यों जाना पड़ा?
- कहानी की चरम सीमा पर आपका विचार क्या है?

» **सही आशय चुनें, मिलान करें :**

<table>
<tr><th>घटना / कथन</th><th>आशय</th></tr>
<tr><td>लड़कों ने कुछ दिनों अपने खेल में तो शामिल नहीं किया, मगर उसे अपनी हँसी-मज़ाक का विषय ज़रूर बना लिया था।</td><td rowspan="4">• विपत्ति की स्थिति का सामना करना
• निराशा की भावना
• सामाजिक समावेश
• सामूहिक अलगाव
• उम्मीद की भावना</td></tr>
<tr><td>अब जब तुम लौटोगे केशव, तो हमारी टीम से खेलना।</td></tr>
<tr><td>रात को सपने में केशव अपने को अक्सर क्रिकेट खेलता देखा करता।</td></tr>
<tr><td>चौक तक दौड़कर दो लोग जाओ और कोई भी ऑटो, टैक्सी मिले फौरन लेकर आओ।</td></tr>
</table>

» **कहानी की मुख्य घटनाओं को चुनकर लिखें और कॉमिक स्ट्रिप तैयार करें :**

- जैसे

» **चर्चा करें और लिखें, कहानी का कौन-सा पात्र आपको सबसे ज्यादा पसंद आया और क्यों?**

- पात्र का नाम
- पात्र की विशेषता
- पात्र का व्यक्तित्व
- पात्र का मनोभाव
- पात्र की भूमिका

» **वाक्यों के रेखांकित अंशों पर ध्यान दें :**

- बड़े लड़कों **को** वहाँ बॉल माँगने जाने पर अपमानित होने का डर रहता था।
- केशव **को** किसी भी टीम में जगह नहीं मिली थी।
- लड़के केशव **को** वापस अहाते के बाहर खींच लेते।
- केशव किनारे बैठा, बाकी लड़कों **को** खेलता देखता रहता।

» **चर्चा करें :**

- *ऊपर के वाक्यों में **को** का प्रयोग प्रत्येक संदर्भ में किस अर्थ को सूचित करता है?*
- *ऐसे प्रयोग कहानी में ढूँढ़कर पुस्तिका में लिखें।*

» **वाक्यों के रेखांकित अंशों पर ध्यान दें :**

- शहर जाकर जमा चंदे **से** नई क्रिकेट सामग्री के साथ एक शील्ड भी खरीद ली।
- खिलाड़ी की कमी की पूर्ति केशव **से** की जाती।
- वह लड़का गया और ऑटोवाले **से** बात की।
- इमारत के पीछे की हिलती चाली **से** चढ़कर छत तक जाना उनके लिए मुश्किल काम था।

» **चर्चा करें :**

- *ऊपर के वाक्यों में **से** का प्रयोग प्रत्येक संदर्भ में किस अर्थ को सूचित करता है?*
- *'**से**' से युक्त इसी प्रकार के वाक्य चुनकर लिखें।*

» **कहानी के अंत में केशव के प्रति लड़कों के मनोभाव में बदलाव आता है। गाँव पहुँचने के बाद केशव अपने अनुभव डायरी में लिखता है। वह डायरी लिखें।**

» **केशव के गाँव पहुँचने के बाद कप्तान केशव के नाम पत्र लिखता है। वह पत्र लिखें।**

अनुबद्ध कार्य

- **कहानी की चरम सीमा को बदलकर लिखें।**

लोकबाबू

जन्म : 10 जून 1954

लोकबाबू का जन्म छत्तीसगढ़ में हुआ। छत्तीसगढ़ अंचल के लोक जीवन की संवेदनशील प्रस्तुति उनकी कहानियों की विशेषता है। टीले पर चाँद, बोधिसत्व भी नहीं आए, जंगलगाथा, बस्तर बस्तर आदि उनकी रचनाएँ हैं।

मदद लें :

बसाहट - वास स्थान
शक्ल - रूप
बदलना - परिवर्तित होना
इमारत - मकान
आसपास - समीप
गठरी - कपड़े में बंधा हुआ सामान
चूल्हा - അടുപ്പ്, **hearth,** அடுப்பு, ಒಲೆ
गुज़ारना - बिताना
पसारना - फैलाना
दादा - पिता के पिता
ज़िद - हठ
बुढ़ापा - वृद्धावस्था
बचा-खुचा - बाकी
दिमाग कुतरना - सताना
हताश - निराश
अस्थाई - अस्थिर
डेरा - रहने की जगह
मजबूर - विवश
आखिर - अंत में
अकुलाना - घबराना
चक्कर लगाना - घूमना
ठहरना - रुकना
शामिल करना - साथ मिलाना
खोपड़ी - सिर
हाथ जमा देना - मारना
जताना - प्रकट करना
दुखना - दर्द होना
उचककर - ऊपर उठकर
पक्का होना - ദൃഢമാവുക, **to harden,** உறுதி செய்தல், ಗಟ್ಟಿಯಾಗು
भागना - ഓടുക, **to run,** ஓடுதல், ಓಡುವುದು
मासूमियत - നിഷ്കളങ്കത, **innocence,** களங்கமில்லாத, ನಿಷ್ಕಲಂಕತೆ

झापड़ लगाना	-	हथेली से मारना
झाड़ी	-	കുറ്റിക്കാട്, bush, குற்றிக்காடு, ಪೊದೆ
गंदी नाली	-	അഴുക്ക് ചാൽ, drainage, வடிகால், ಚರಂಡಿ
जिम्मा	-	ചുമതല, responsibility, பொறுப்பு, ಜವಾಬ್ದಾರಿ
हिस्सा	-	अंग, ഭാഗം, part, பகுதி, ಭಾಗ
खूँखार दंपति	-	भयानक दंपति
अहाता	-	പുരയിടം, yard, வளாகம், ಮನೆಯ ಸುತ್ತು ಮುತ್ತಲಿರುವ ಸ್ಥಳ
हाथ धो बैठना	-	नष्ट कर देना
उतारना	-	താഴെ ഇറക്കുക, to bring down, கீழே இறக்குதல், ಕೆಳಗೆ ಇಳಿಸುವುದು
ढूँढ़ना	-	അന്വേഷിക്കുക, to search, தேடுதல், ಹುಡುಕುವುದು
उछालना	-	എറിയുക, to throw, எறிதல், ಬಿಸಾಡುವುದು
खींचना	-	വലിക്കുക, to pull, இழுத்தல், ಎಳೆಯುದು
ज़्यादातर	-	अधिकतर
खिलाना	-	കളിപ്പിക്കുക, to cause a person to play, விளையாடச் செய்தல், ಆಡಿಸುವುದು
बल्ला	-	ബാറ്റ്, cricket bat, கிரிக்கெட் மட்டை, ಬ್ಯಾಟ್
डपटना	-	डाँटना
रुआँसा	-	കരയുന്നതു പോലെയുള്ള, on the verge of weeping, அழுவதுபோன்ற, ಕೂಗುವ ಹಾಗೆ ಇರುವ
झक	-	चमकता, തിളങ്ങുന്ന, shining, மின்னுகின்ற, ಹೊಳೆಯುವ
शानदार	-	सुंदर
दनादन	-	निरंतर
छक्का	-	छह रन
चौका	-	चार रन
बड़बड़ाना	-	പുലമ്പുക, to mutter, முணுமுணுத்தல், ಗೊಣಗುವುದು
डाँट खाना	-	फटकार मिलना
मोहल्ला	-	शहर या कस्बे का एक भाग
चंदा	-	പിരിവ്, donation, பணம் வசூலித்தல், ಹಣ ಸಂಗ್ರಹ ಮಾಡುವುದು
बँटना	-	टीम बनना
बल्लेबाज	-	batter, ಬ್ಯಾಟ್ಸ್ ಮನ್ மட்டைவீச்சாளர்
हक्का-बक्का	-	विस्मित
इकलौता	-	एकमात्र, ഏക, single, ஒற்றை, ಒಬ್ಬಂಟಿಗ

हिलना - ഇളക്കുക, to shake, இளகுதல், ಅಲುಗಾಡಿಸು

चाली - छत पर चढ़ने का अस्थाई प्लैटफॉर्म

कोसना - शाप देना

उछल जाना - കുതിച്ചു പോവുക, to bounce up, குதித்துச் செல்லுதல், ಹಾರಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವುದು

कमज़ोरी - दोष

भुनभुनाना - गुस्सा होना

चकराना - അമ്പരക്കുക, to be surprised, ஆச்சரியமடைதல், ಆಶ್ಚರ್ಯಚಕಿತನಾಗಿ

चकित - विस्मित

रमना - आनंद करना

मुड़े-तुड़े - ഒടിഞ്ഞുമടങ്ങി, crumpled, ஒடிதல், ತುಂಡುಮಾಡುವುದು

बेसुध - अबोध

छींटे - बूँदें

हरकत - അനക്കം, movement, அசைந்தான், ಚಲನೆ

कुनमुनाना - പിറുപിറുക്കുക, to mutter, முணுமுணுத்தல். ಗೊಣಗುವುದು

चौक - जंक्शन

जतन से - सावधानी से

लिटाना - കിടത്തുക, to cause someone to lie down, படுக்கவைத்தல், ಮಲಗಿಸು

खबर लाना - समाचार जानना

करवट - ഒരു വശം ചരിഞ്ഞുള്ള കിടപ്പ്, lying on one side, ஒரு பக்கமாகச்சாய்ந்து படுத்தல், ಒಂದು ಮಗ್ಗುಲಿಗೆ ತಿರುಗಿ ಮಲಗು

घेरना - വളയുക, to surround, சுற்றி வளைத்து, ಸುತ್ತುವರಿಯು

तकलीफ - कठिनाई

साबुत - स्वस्थ

टूट पड़ना - कुछ लेने के लिए एकदम दौड़ पड़ना

धरना - रखना

लहराना - വീശുക, to wave, வீசுதல், ಬೀಸುವುದು